Airo International Research Journal
Volume XIII, ISSN: 2320-3714
September, 2017
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

नई कविता के प्रबंध काव्यों में बिंब विधान

डॉ. ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों ने बिम्ब सम्बंधी अनेक परिभाषाएं दी हैं किन्तु इसकी ऐसी परिभाषा नहीं बन सकी जो सर्व-स्वीकृत हो । मूलत: हिन्दी का 'बिम्ब' शब्द अंग्रेजी के 'इमेज' का पर्यायवाची है । 'इमेज' से मानसिक प्रतिकृति, मानस प्रत्यक्ष अथवा किसी वस्तु की सादृश्य योजना आदि अर्थ अभिव्यक्त होते है । संस्कृत में बिम्ब का अर्थ है - छाया, प्रतिच्छाया जो बिम्ब के समानार्थक है । बिम्ब शिल्प का मुख्य और आवश्यक तत्व है । आमतौर पर जब कवि किसी अनुभूत मस्तिष्क चित्र को शब्दों के सांचे में ढालकर प्रस्तुत करता है, बिम्ब कहलाता है । आचार्य दण्डी ने काव्यादर्श में लिखा है - "शब्द की ज्योति से ही बिम्ब उदभाषित है. अगर शब्द नहीं रहते तो इस दुनियां में अंधेरा ही छाया रहता।" आचार्य शक्ल काव्य में बिम्ब शब्द का स्वरूप और महत्व बताते हुए लिखते हैं कि 'काव्य में अर्थ ग्रहण मात्र से काम नहीं चलता, बिम्ब ग्रहण अपेक्षित होता है । यह बिम्ब ग्रहण निर्दिष्ट, गोचर और मूर्त विषय का ही हो सकता है । वे आगे कहते है - "काव्य का काम कल्पना में बिम्ब अथवा मूर्त भावना उपस्थित करना होता है, बुद्धि के सामने कोई विचार लाना नही.....।" इस प्रकार उन्होंने बिम्ब की महत्वपूर्ण विशेषता उसकी चित्र विधायिनी शक्ति को ही माना है ।

डॉ. कैलाश वाजपेयी ने बिम्ब के विषय में लिखा है कि - "बिम्ब से तात्पर्य कलाकार की उस क्षमता से है जिसके सहारे वह बीती हुई घटनायें और विषय-वस्तु का रंग, ध्वनि, गति, आकार, प्रकार सहित देश काल परिस्थितियों को ध्यान में रखकर शब्द चित्रों में वर्णित कर देता है । यह शब्द चित्र उसी प्रकार का होता है जैसा की उस घटना या वस्तु का स्वरूप था । श्री वाजपेयी जी ने बिम्ब को मस्तिष्क का चित्र कहा है - "कवि जिस वस्तु-स्थिति या भाव को काव्य में अभिव्यक्त करता है, पहले उसे मानस चक्षु से देखता है । वह इनका बिम्ब मस्तिष्क में ग्रहण करके शब्दों के माध्यम से सोता, द्रष्टा या पाठक के लिए बोध गम्य बनाता है । वर्ण्य-विषयों का यह प्रत्यक्षीकरण ही बिम्ब विधान है ।" डॉ. नगेन्द्र बिम्ब निर्माण में भावों की सघनता और कल्पना की दृष्टि को आवश्यक मानते हैं - "काव्य बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस छवि है जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है ।' डॉ. केदारनाथ सिंह के अनुसार कवि मानव मन के सहज, अकृत्रिम, गतिशील, जटिल संवेगों का भाषा के जीवन्त माध्यम के द्वारा शाब्दिक पुनर्निर्माण करता है तो समीक्षा की आधुनिक पदावली में बिम्ब-विधान कहते है ।

Airo International Research Journal
Volume XIII, ISSN: 2320-3714
September, 2017
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

दिशाहीनता ओर निराशा से उत्पन्न स्थिति को कवियों ने भिन्न-भिन्न सशक्त बिम्बों के माध्यम से व्यक्त किया है।

संदर्भ सूची ----------

1. यतीन्द्र तिवारी : नए दशक की हिंदी कविता,सरस्वती प्रकाशन, कानपुर 1993, पृ0 124
2. आचार्य शुक्ल : रस मीमांसा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी पृष्ठ 167
3. आचार्य शुक्ल :चिंतामणि भाग 1, इंडियन प्रेस, प्रयाग 287
4. डॉ0 शिवपाल सिंह, पंत का काव्य शिल्प, साहित्य रत्नालय, कानपुर
5. वही
6. डॉ0नगेंद्र, काव्य बिंब, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1967
7. डॉ0 पी0 मणिक्याम्बा महादेवी के काव्य में बिंब विधान, सौरभ प्रकाशन, 39/2 हैदराबाद
8. डॉ0 जगदीश गुप्त, नई कविता, अंक 7, 188
9. सी0डे0लुवीस, दि पोयटिक इमेज
10. ब्राउन स्टीफेन, दि वर्ल्ड ऑफ इमेजरी
11. धर्मवीर भारती, 'अंधायुग' किताब महल-15, इलाहाबाद 1993
12. धर्मवीर भारती, 'कनुप्रिया', भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली 1976
13. नरेश मेहता, 'संशय की एक रात' पुस्तकायन 59, इलाहाबाद 1970
14. डॉ0 विनय, एक पुरुष ओर, भारतीय भाषा प्रकाशन, 1976
15. डॉ0 भारत भूषण अग्रवाल, अग्निलीक, राजकमल प्रकाशन, 1975
16. बलदेववंशी, आत्मदान, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1982
17. जगदीश चतुर्वेदी, सूर्यपुत्र, मैकमिलन कंपनी इंडिया लिमिटेड, 1975
18. शैल सक्सेना, निर्वासित कर्ण, हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली 1997
19. दुष्यंत कुमार, एक कंठ विषपायी, लोकभारती, इलाहाबाद 1992
20. जगदीश चतुर्वेदी, संभूक, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1990
21. नरेश मेहता, प्रवाद पर्व, लोकभारती, इलाहाबाद 1977
22. रमेश दिविक, खंड-खंड अग्नि, वाणी प्रकाशन 1994